अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का व्यवहार अपने शत्रुओं के साथ

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह, दयावान, कृपाशील के नाम से'

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का व्यवहार

अपने शत्रुओं के साथ

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विषय में क़ुरआन में कहा गया है—

> "(ऐ नबी!) हमने तुम्हें सारे संसार के लिए मात्र दयालुता (रहमत) बनाकर भेजा है।" (क़ुरआन, 21:107)

क़ुरआन की यह आयत बताती है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को पैग़म्बरी के पद पर नियुक्त करने का वास्तविक उद्देश्य यह रहा है कि संसार में ईश्वर की दया और अनुकम्पा पूर्ण रूप से प्रदर्शित हो और ऐसा न हो कि मानवजाति दुनिया की हर चीज़ से तो फ़ायदा उठाए, किन्तु ईश्वर की दया और उसकी विशेष अनुकम्पा से वंचित रह जाए।

किन्तु जानना चाहिए कि भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से बढ़कर ईश्वर की विशिष्ट अनुकम्पा और अनुग्रह मानव-जीवन के एक अन्य क्षेत्र में भी हुआ है। वह मानव का आत्मिक क्षेत्र है। मानव शरीर ही नहीं रखता, बल्कि वह आत्मा भी रखता है। आध्यात्म की गहराई में जाने के बाद ज्ञात होता है कि मानव वास्तव में शरीर नहीं बल्कि आत्मा ही है। मनुष्य के शरीर की आवश्यकताओं की तरह उसकी आत्मा की भी अपनी विशिष्ट आवश्यकताएँ हैं। आत्मा की एक बड़ी आवश्यकता यह है कि वह चाहती है कि उसके अपने

अस्तित्व का कोई उच्च और स्थायी आशय हो। क्योंकि इसके बिना उसकी और मानव-जीवन की कोई सार्थकता ही शेष नहीं रहती। जिस प्रकार प्यास और भूख में शरीर के लिए जल और भोज्य-पदार्थ चाहिए उसी प्रकार आत्मा की भी अपनी पिपासा है। आत्मा की प्यास और भूख वास्तव में आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान ही से मिट सकती है। इसके अतिरिक्त आत्मा स्वभावतः अपनी अभिव्यक्ति भी चाहती है। यह अभिव्यक्ति मनुष्य के नैतिक आचरण के द्वारा संभव होती है। नैतिक गुणों और नैतिक मान्यताओं को जो महत्त्व प्राप्त है उसके वास्तविक कारण से साधारणतः लोग अनभिज्ञ होते हैं। नैतिक गुणों और नैतिक व्यवहार के द्वारा वास्तव में आत्मा की कोमलता और सुन्दरता की अभिव्यक्ति होती है। नैतिकता अपने व्यापक अर्थों में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्ध रखती है और जीवन का प्रत्येक क्षेत्र इससे आच्छादित होता है, चाहे उसका सम्बन्ध सामाजिक मामलों से हो या आर्थिक समस्याओं से, या वह राजनीति के क्षेत्र से हो। किसी भी क्षेत्र से नैतिकता का बहिष्कार जघन्य अपराध एवं अन्याय से कम नहीं।

साधारणतया लोग अपने शरीर के आस-पास ही जीते हैं, इसलिए वे अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को ख़ूब समझते हैं और उन शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति से प्राप्त इन्द्रीय सुख का ही आभास करते हैं। काश, वे यह जान सकें कि इन्द्रीय सुख ही सब कुछ नहीं है, आत्मा द्वारा मनुष्य को जो सुख और शान्ति प्राप्त होती है और उसे जिस आनन्द का आभास होता है, वह चीज़ और ही है, उसका तो किसी और चीज़ से मुक़ाबला किया ही नहीं जा सकता। आत्मा द्वारा मनुष्य उस ऊँचाई को पा लेता है जहाँ जीवन संगीतमय हो जाता है, जीवन कोई अप्रिय बोझ बनकर नहीं रहता।

इस्लाम ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिकता ही को मूल आधार स्वीकार किया है। नैतिकता का सम्बन्ध किसी एक क्षेत्र से नहीं वरन् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से है, नैतिक आचरणों के माध्यम से ही जीवन

में आत्मा की अभिव्यक्ति होती है और नैतिक आचरण के द्वारा ही आत्मा विकसित भी होती है। आत्मा की इसी अभिव्यक्ति के कारण सज्जनता, सुशीलता, सच्चरित्रता और मृदुभाषिता आदि में से एक प्रकार का अलौकिक सौन्दर्य का आभास होता है।

ऊपर यह बात आ चुकी है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की नुबूवत का वास्तविक उद्देश्य ईश्वरीय दयालुता का प्रदर्शन था। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आप (सल्ल०) को नुबूवत के पद पर आसीन किया गया था। मानव के मार्गदर्शन की जो महान् सेवा आप (सल्ल०) ने की है उसमें ईश्वर की अनुकम्पा और दयालुता ही दिखाई देती है। जिस प्रकार ईश्वर सारे जगत् का पालनकर्ता और प्रेमपात्र है उसी तरह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की करुणा और शिक्षाएँ भी सारे मानवों के लिए हैं। आप (सल्ल०) वास्तव में सम्पूर्ण मानव के कल्याण और भलाई के लिए ही दुनिया में आए थे। आप (सल्ल०) की शिक्षा मित्र तो मित्र शत्रुओं के प्रति भी सुचरित्रता और सज्जनता के साथ पेश आने की शिक्षा है। क़ुरआन में है—

> "तुम बुराई को अच्छे से अच्छे चरित्र के द्वारा दूर करो, फिर देखो कि वही व्यक्ति, तुम्हारे और जिसके मध्य शत्रुता पाई जाती थी, ऐसा हो गया जैसे कि कोई घनिष्ट मित्र हो।"
>
> (क़ुरआन, 41:34)

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने संसार के समस्त मानवों को समान रूप से सत्य-धर्म से परिचित कराने का प्रयास किया। इसमें अपने और पराए का कोई अंतर नहीं रखा। फिर इसी के साथ आप (सल्ल०) की शिक्षा भी थी कि नेकी और ईशपरायणता के कार्यों में सबके साथ सहयोग किया जाए और अन्याय और अत्याचार के कामों में अपना सहयोग देने से बचा जाए। क़ुरआन में भी स्पष्ट शब्दों में आया है—

> "हक़ अदा करने और ईशपरायणता के काम में एक-दूसरे का

सहयोग करो और हक़ मारने और ज़ुल्म-ज़्यादती के काम में एक-दूसरे का सहयोग न करो।" (क़ुरआन, 5:2)

एक अवसर पर आप (सल्ल०) ने स्पष्ट शब्दों में यह भी कहा कि ईश्वर ने मुझे मात्र इस उद्देश्य से भेजा है कि मैं नैतिक गुणों को उनकी पराकाष्ठा तक पहुँचा दूँ कि उनमें किसी प्रकार की कमी न रहे।

नबी (सल्ल०) ने कमज़ोरों और निस्सहाय लोगों को ऊपर उठाया, प्रताड़ित स्त्रियों को सम्मान दिया और इस बात की ताकीद की कि उनके हक़ और अधिकारों का ध्यान रखा जाए। हम यहाँ आप (सल्ल०) के महान कार्यों का विवरण प्रस्तुत करना नहीं चाहते। इस समय हम केवल यह देखने की कोशिश करेंगे कि आप (सल्ल०) का व्यवहार ग़ैरों और अपने शत्रुओं के साथ कैसा रहा है। जो अपने शत्रुओं का शुभ चाहता हो उसका अपने शत्रुओं के प्रति कितना करुणापूर्ण व्यवहार होगा, इसे प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है।

नबी (सल्ल०) का शत्रुओं के प्रति व्यवहार

जब हम अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जीवन-चरित्र का अध्ययन करते हैं तो जो विशेष बात स्पष्ट रूप से सामने आती है वह यह है कि आप (सल्ल०) ने कभी भी अपने किसी बड़े-से-बड़े दुश्मन से भी व्यक्तिगत बदला नहीं लिया। नुबूवत के एलान के बाद आप (सल्ल०) के विरोधियों ने आप (सल्ल०) और आप (सल्ल०) के साथियों के साथ जो दुर्व्यवहार किया और ज़ुल्म की नीति अपनाई, इतिहास के पृष्ठों में उसे देखा जा सकता है। कौन-सा अत्याचार है जो विरोधियों ने आप (सल्ल०) और आप (सल्ल०) के अनुयायियों के साथ न किया हो। विरोधियों के ज़ुल्म से विवश होकर आप (सल्ल०) के कितने ही सहाबा (रज़ि०) को देश छोड़कर हब्शा में पनाह लेनी पड़ी। दुश्मनों ने वहाँ भी उनका पीछा किया। स्वयं रसूल (सल्ल०) को क़त्ल करने की साज़िश रची गई और विवश होकर आप (सल्ल०) को अपने प्रिय नगर

मक्का को त्याग कर मदीना की ओर प्रस्थान करना पड़ा। मदीना जाने से पहले आप (सल्ल०) की इच्छा थी कि काबा में दाख़िल हो लें, लेकिन काबे का द्वार आपके लिए नहीं खोला गया। काबे के कुंजीबरदार ने आप (सल्ल०) के लिए काबे का द्वार खोलने से सख़्ती के साथ इनकार कर दिया, लेकिन दुनिया ने यह दृश्य भी देखा कि मक्का की विजय के अवसर पर काबा की कुंजी आप (सल्ल०) ने उसी व्यक्ति को प्रदान की जिसने काबे का द्वार आप (सल्ल०) के लिए बंद रखा और कुछ भी नर्मी से काम न लिया। आप (सल्ल०) ने कुंजी उसे सौंपते हुए यह कहा कि जो व्यक्ति इससे कुंजी छीनेगा, ज़ालिम होगा। उस व्यक्ति को आप (सल्ल०) का ऐसा आशीर्वाद प्राप्त हुआ कि आज भी काबा की कुंजी उसी व्यक्ति के ख़ानदान में चली आ रही है।

□ □ □

जब मक्का के इस्लाम विरोधियों ने देखा कि मुसलमान मदीना में शक्तिशाली होते जा रहे हैं और वहाँ इस्लाम फैलता जा रहा है तो उन्होंने विचार-विमर्श के लिए गोष्ठी की और अंत में यह निर्णय किया कि हर क़बीले से एक व्यक्ति चुना जाए और फिर एक साथ मिलकर मुहम्मद (सल्ल०) की हत्या कर दी जाए। इस प्रकार इस हत्या में तमाम क़बीले सम्मलित होंगे और मुहम्मद (सल्ल०) का क़बीला आले-हाशिम तमाम क़बीलों का मुक़ाबला न कर सकेगा। सबने आप (सल्ल०) के घर को घेर लिया, ताकि जब आप (सल्ल०) सुबह को घर से बाहर निकलें तो आप (सल्ल०) पर हमला कर दें। अरब के लोग किसी के घर के भीतर, जहाँ औरतें भी रहती हों, प्रवेश करना बुरा समझते थे, इसलिए वे बाहर ही ठहरे रहे ताकि प्रातः बेला में आप (सल्ल०) को क़त्ल किया जा सके।

धर्म के विरोधियों को नबी (सल्ल०) से इस दर्जे की शत्रुता थी फिर भी वे आप (सल्ल०) की ईमानदारी पर भरोसा रखते थे। जिस किसी को कुछ माल या कोई चीज़ किसी के पास अमानत के रूप में

रखनी होती तो वह आप (सल्ल०) ही के पास आकर रख देता था। इस तरह आप (सल्ल०) के पास बहुत-सी अमानतें एकत्र हो गई थीं। आप (सल्ल०) को पहले से मालूम हो गया था कि शत्रुओं का इरादा क्या है। इसलिए आप (सल्ल०) ने हज़रत अली (रज़ि०) को बुलाया और कहा कि मुझे ईश्वर की ओर से आदेश मिल चुका है। मैं आज मक्का छोड़कर मदीना के लिए प्रस्थान करूँगा। तुम मेरी जगह मेरे पलंग पर मेरी चादर ओढ़कर सो जाओ, सुबह-सवेरे सबकी अमानतें वापस कर देना।

सोचने की बात है कि ऐसे शत्रु जो नबी (सल्ल०) को क़त्ल करना चाहते हैं, किन्तु आप यह नहीं चाहते कि उनकी अमानत की चीज़ें उन तक न पहुँचें। ऐसे नाज़ुक अवसर पर भी आप (सल्ल०) ने ऐसी व्यवस्था की कि दुश्मनों की अमानतें उन तक पहुँच सकें। यह था नबी (सल्ल०) का व्यवहार अपने उन शत्रुओं के साथ जो आप (सल्ल०) की जान के दुश्मन हो गए थे। ऐसे नाज़ुक अवसर पर भी आप (सल्ल०) ने जिस धर्मपरायणता का परिचय दिया, इतिहास में उसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है।

□ □ □

मक्का में नबी (सल्ल०) विजयी होकर प्रवेश करते हैं। आप (सल्ल०) के वे शत्रु जो आप (सल्ल०) के ख़ून के प्यासे रहे हैं और जिन्होंने तरह-तरह की आपको तकलीफ़ें पहुँचाई थीं, तीन वर्ष तक अबू तालिब की घाटी में आप (सल्ल०) को और आप (सल्ल०) के ख़ानदानवालों को क़ैद कर रखा था और सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार (Social and Economical Boycott) के कष्ट झेलने पर विवश कर दिया था, आज वे सारे शत्रु पराजित होकर सामने खड़े थे और भयभीत थे कि देखिए आज उनके साथ क्या व्यवहार किया जाता है। आप (सल्ल०) ने कोई रक्तपात नहीं किया, बल्कि घोषणा कर दी कि जो मस्जिदे-हराम में पनाह ले ले, उसे पनाह दी जाती है; जो अबू सुफ़ियान के घर में शरण ले ले उसे भी अमान प्राप्त है और जो अपने ही घर में पनाह ले ले उसे भी क्षमा

कर दिया जाएगा। अबू सुफ़ियान क़ुरैश के सरदारों में से था। उसने आप (सल्ल०) की दुश्मनी में किसी प्रकार की कमी नहीं की थी और जब तक उसका बस चला आप (सल्ल०) का विरोध ही करता रहा। किन्तु आज आप (सल्ल०) अपने इतने बड़े शत्रु को यह कहकर सम्मानित कर रहे हैं कि जो अबू सुफ़ियान के घर शरण ले ले उसे भी अमान है।

नबी (सल्ल०) की सज्जनता और आप (सल्ल०) के महान चरित्र को देखिए कि दुश्मन शिकंजे में हैं और डरे-सहमे हैं; सोच रहे हैं कि न जाने उनके साथ क्या व्यवहार किया जाने वाला है। तभी आप (सल्ल०) की ओर से एलान किया जाता है—

"आज़ तुमपर कोई मलामत नहीं; जाओ, तुम सब स्वतंत्र हो।"

□ □ □

वह्शी नामक एक व्यक्ति मक्का में रहता था। इसी व्यक्ति ने नबी (सल्ल०) के प्रिय चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि०) को क़त्ल किया था। वह यह सोचकर मक्का से भाग गया था कि मुहम्मद (सल्ल०) उसे क्षमा नहीं कर सकते। लेकिन जब उसे आप (सल्ल०) की दया और सद्व्यवहार की सूचना मिली तो वापस आकर आप (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ। आप (सल्ल०) ने उसे क्षमा कर दिया। केवल इतना कहा कि तुम मेरे सामने न आया करना, क्योंकि तुम्हें देखकर मुझे चचा की याद आएगी और ग़म ताज़ा हो जाएगा।

□ □ □

हिन्द अबू सुफ़ियान की पत्नी थी। इसने आप (रज़ि०) के चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि०) की छाती फाड़कर उनके कलेजे के टुकड़े किए थे। मक्का की विजय के अवसर पर चेहरे पर नकाब डालकर आपके पास आई ताकि आप (सल्ल०) उसे पहचान न सकें और अमान हासिल हो जाए। इस अवसर पर भी वह दुस्साहस दिखाने से बाज़ न आई।

आप (सल्ल०) ने उसे पहचान लिया और उसे क्षमा कर दिया। आप (सल्ल०) ने उस हृदयविदारक घटना का ज़िक्र तक न किया। हिन्द के लिए आप (सल्ल०) का यह व्यवहार किसी आश्चर्यजनक चमत्कार से कम न था, वह प्रभावित हुए बिना न रह सकी और पुकार उठी —

> "ऐ अल्लाह के रसूल! आपके शिविर से अधिक बुरा कोई शिविर मेरी दृष्टि में न था, किन्तु आज आपके शिविर से बढ़कर प्रिय कोई दूसरा शिविर नहीं है।"

□ □ □

सफ़वान-बिन-उमैया क़ुरैश के रईसों में से था। उसकी गणना इस्लाम के घोर शत्रुओं में होती थी। यही वह व्यक्ति है जिसने उमैर-बिन-वहब को नबी (सल्ल०) के क़त्ल पर नियुक्त किया था और इसके लिए उसने इनाम का वादा भी कर रखा था। मक्का पर जब नबी (सल्ल०) को विजय प्राप्त हुई तो वह भागकर जद्दा चला गया और वहाँ से समुद्र-मार्ग से यमन जाने की सोच रहा था। उमैर-बिन-वहब ने नबी (सल्ल०) से कहा कि सफ़वान अपने क़बीले के रईस हैं। डर के कारण भाग गए हैं। आप (सल्ल०) ने कहा, "उसे अमान है।" उमैर (रज़ि०) ने कहा कि अमान की कोई निशानी प्रदान की जाए जिसे देखकर उनको विश्वास हो कि उनकी जान के लिए कोई ख़तरा नहीं है। आप (सल्ल०) ने अपना अमामा (पगड़ी) प्रदान किया। जब हज़रत उमैर (रज़ि०) उस अमामा को लेकर सफ़वान के पास पहुँचे तो सफ़वान ने कहा कि मुझे वहाँ जाने में अपनी जान का डर है। उमैर (रज़ि०) ने कहा, "सफ़वान, तुम अभी मुहम्मद (सल्ल०) की सहनशीलता और क्षमा से परिचित नहीं हो!" सफ़वान हज़रत उमैर (रज़ि०) के साथ नबी (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुए और कहा कि "उमैर कहते हैं कि आपने मुझे अमान दी है?" आप (सल्ल०) ने कहा, "यह सच है।" सफ़वान ने निवेदन किया कि मुझे दो माह की मुहलत दी जाए। आप (सल्ल०) ने कहा, "तुम्हें चार माह की मुहलत है।" इसके बाद सफ़वान सहर्ष इस्लाम स्वीकार कर लेते हैं।

□ □ □

इकरमा इस्लाम के सबसे बड़े शत्रु अबू जह्ल के बेटे थे। ये भी अपने पिता की तरह नबी (सल्ल०) के कट्टर शत्रुओं में से थे। मक्का की विजय के अवसर पर भागकर यमन चले गए। इकरमा की पत्नी ने इस्लाम ग्रहण कर लिया था। वह यमन गई और इकरमा को भरोसा दिलाया कि तुम्हें क्षमा कर दिया जाएगा। इकरमा इस्लाम ग्रहण कर लेते हैं और नबी (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित होते हैं। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने जब इकरमा को देखा तो आप (सल्ल०) की ख़ुशी की कोई हद न रही। आप (सल्ल०) तुरन्त खड़े हो गए और तेज़ी से इकरमा की ओर बढ़े। उस समय आप (सल्ल०) की ज़बान पर ये शब्द थे—

मरहबा बिर्राकिबिल्-मुहाजिर

अर्थात् "ऐ हिजरत करनेवाले सवार तुम्हारा स्वागत है।"

□ □ □

अरब के क़बीलों में से कोई क़बीला अगर अंत तक इस्लाम का विरोधी रहा तो वह बनी हनीफ़ा का क़बीला था। सुमामा-बिन-अस्साल इस क़बीले के रईसों में से था। संयोग से मुसलमानों के हाथ गिरफ़्तार हुआ। नबी (सल्ल०) के आदेश से उसे मस्जिद के खम्भे से बाँध दिया गया। आप (सल्ल०) मस्जिद में आए तो पूछा कि सुमामा तुम्हारा क्या हाल है? उसने कहा, "ठीक है, ऐ मुहम्मद! अगर मुझे क़त्ल करते हो तो एक ऐसे व्यक्ति को क़त्ल करोगे जो अपनी कौम का सरदार है और यदि एहसान करोगे तो यह एहसान एक कृतज्ञ व्यक्ति पर होगा। अगर धन चाहिए तो कहो, मैं दूँगा।" आप (सल्ल०) उसे इसी दशा में छोड़कर चले गए। फिर दूसरे दिन आप (सल्ल०) उसके पास आए और कहा, "सुमामा, तुम्हारा क्या हाल है?" उसने कहा, "वही जो मैं पहले कह चुका हूँ। यदि एहसान करोगे तो यह एहसान एक

कृतज्ञ व्यक्ति पर होगा।" आप (सल्ल०) फिर उसे उसी हाल पर छोड़कर चले गए। यहाँ तक कि इसके बाद जब उसके पास आए तो कहा, "सुमामा, क्या हाल है?" उसने कहा, "मेरा हाल वही है जो मैं पहले बयान कर चुका हूँ।" आप (सल्ल०) ने कहा, "सुमामा को खोल दो!"

सुमामा को इस मधुर व्यवहार की आशा न थी। क़ैद से रिहा होकर निकट के बाग़ में जाकर स्नान किया और लौट कर इस्लाम ग्रहण कर लिया और अपने भाव को इन शब्दों में व्यक्त किया—

> "ऐ अल्लाह के रसूल! धरती पर पहले मेरी दृष्टि में आपके चेहरे से अधिक नापसन्दीदा कोई चेहरा न था, किन्तु आज आपका चेहरा समस्त चेहरों में अधिक प्रिय है। ईश्वर की सौगन्ध! आपके धर्म से अधिक बुरा मेरी दृष्टि में कोई अन्य धर्म न था, और आज सबसे बढ़कर प्रिय मेरी दृष्टि में आपका धर्म है। ईश्वर की सौगन्ध! पहले समस्त नगरों में सबसे बुरा नगर मेरी दृष्टि में आपका नगर था, किन्तु आज समस्त नगरों में मेरी दृष्टि में प्रिय आपका नगर है।"

पहले दिन सुमामा का ख़्याल था कि उसे क़त्ल कर दिया जाएगा, उसे क्षमा नहीं किया जा सकता। किन्तु जब उसने आप (सल्ल०) की उदारता और आप (सल्ल०) के मधुर व्यवहार को देख लिया तो निराशा आशा में बदल गई और अपनी वार्ता का आरम्भ उसने एहसान और कृतज्ञता पूर्ण शब्दों से किया। नबी (सल्ल०) के सद्व्यवहार और आप (सल्ल०) की सुशीलता का प्रभाव यह हुआ कि आप (सल्ल०) से अत्यधिक घृणा करनेवाला वह व्यक्ति मूलतः बदल जाता है और बिना किसी विलम्ब के आप (सल्ल०) पर प्राण न्योछावर करनेवालों में सम्मलित हो जाता है और आप (सल्ल०) ही नहीं बल्कि आप (सल्ल०) की हर चीज़ उसे सबसे बढ़कर प्रिय हो जाती है। यह था नबी (सल्ल०) के चरित्र का वह जादू जिससे बढ़कर किसी जादू की कल्पना भी नहीं कर सकते।

□ □ □

हुदैबिया की संधि के अवसर पर हज़रत असमा की माँ, जो मुस्लिम नहीं थी, अपनी बेटी असमा के पास आर्थिक सहायता के लिए आती हैं। हज़रत असमा (रज़ि०) नबी (सल्ल०) के पास आकर पूछती हैं कि मेरी माँ जो इस्लाम की विरोधी और बहुदेववादी है उसके साथ क्या व्यवहार करूँ? आप (सल्ल०) ने कहा, "उसके साथ नेक व्यवहार करो।"

□ □ □

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) की माँ इस्लाम-विरोधी थीं। नबी (सल्ल०) को गालियाँ दिया करती थीं। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने जब उसके सम्बन्ध में आप (सल्ल०) से कहा तो आप (सल्ल०) ने क्रोधित होने के बजाए उसके हक़ में दुआ के लिए अपने हाथ उठा दिए। आप (सल्ल०) की दुआ क़बूल हो गई और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) की माँ ईमान ले आईं।

□ □ □

फ़िदक़ की विजय के बाद की घटना है। यह हिजरत का सातवाँ वर्ष था। हज़रत बिलाल (रज़ि०) नबी (सल्ल०) के विशिष्ट निकटस्थ व्यक्ति थे और आप (सल्ल०) के घर के प्रबन्धक रहे हैं। अभाव की दशा में बाज़ार से उधार सौदा भी लाते थे और जब रक़म आ जाती तो ऋण चुका देते। एक अवसर पर एक बहुदेवादी व्यक्ति ने उनसे कहा, "ऋण लेना हो तो मुझसे ले लिया करो।" हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने उससे ऋण ले लिया। एक दिन जब बिलाल अज़ान देने के लिए खड़े हुए तो वह व्यक्ति कुछ सौदागरों के साथ आया और कहा, "ऐ हब्शी! वादे के केवल चार दिन शेष रह गए हैं। ऋण न चुकाया तो मैं तुमसे बकरियाँ चरवाकर रहूँगा।"

हज़रत बिलाल (रज़ि०) नबी (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुए

और कुछ दिन कहीं चले जाने का अपना इरादा ज़ाहिर किया। नबी (सल्ल०) ने जब यह सब कुछ सुना तो उस व्यक्ति के बारे में कुछ नहीं कहा और न ही उसके दुर्भावपूर्ण कटु शब्दों और क्रूरता का कुछ ख़याल किया। इसके बाद संयोग से ग़ल्ला आ जाता है और ऋण चुका दिया जाता है।

□ □ □

एक यहूदी का लड़का बीमार होता है। नबी (सल्ल०) उसका हाल मालूम करने के लिए उसके यहाँ जाते हैं। आप (सल्ल०) ने देखा कि वह मरने के निकट है। आप (सल्ल०) को उसके परलोक की चिंता होती है। आप (सल्ल०) सोच में पड़ जाते हैं कि कहीं यह ईमान लाए बिना दुनिया से विदा न हो जाए और परिणामतः नरक में जा पड़े। आप (सल्ल०) ने विलम्ब नहीं किया और लड़के के पिता की मौजूदगी में उसके सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह सत्यधर्म को स्वीकार कर ले। बेटे ने पिता की ओर देखा कि वे क्या कहते हैं। वह लड़का बड़ा सौभाग्यशाली था। पिता ने कहा, "बेटा! अबुल-क़ासिम (नबी सल्ल०) की बात मान ले।" पुत्र इस्लाम स्वीकार कर लेता है और नबी (सल्ल०) की मौजूदगी में संसार से प्रस्थान कर जाता है। नबी (सल्ल०) सहाबा (रज़ि०) से कहते हैं कि अपने भाई की अंत्येष्टि की तैयारी करो।"

□ □ □

ईसाइयों का एक प्रतिनिधिमण्डल नजरान से मदीना आया। नबी (सल्ल०) ने उसका अतिथि-सत्कार किया और उसे मस्जिदे-नबवी में ठहराया। इतना ही नहीं बल्कि आप (सल्ल०) ने उसे इसकी भी इजाज़त दे दी कि वह मस्जिद में अपने तरीक़े पर उपासना भी कर सकता है। सहाबा ने प्रतिनिधि-मण्डल के लोगों को रोकना चाहा, मगर नबी (सल्ल०) ने कहा कि उन्हें अपने तरीक़े से इबादत करने से रोका न जाए।

□ □ □

अब्दुल्लाह-बिन-उबई मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) का सरदार था। वह अपने आपको मुसलमान ज़ाहिर करता था, मगर दिल से वह आप (सल्ल०) का और इस्लाम का शत्रु था। उसके साथियों की नीति भी कपटाचार ही की थी। अब्दुल्लाह-बिन-उबई को जब भी अवसर मिला इस्लाम और मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने में कोई कमी नहीं की और न वह नबी (सल्ल०) को तकलीफ़ पहुँचाने से बाज़ आया। उहुद की लड़ाई में ठीक युद्ध के नाज़ुक अवसर पर अपने तीन सौ आदमियों को लेकर अलग हो गया। फिर भी आप (सल्ल०) ने उसे क्षमा कर दिया। मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) का यह सरदार जब मरा तो इस एहसान के बदले में कि उसने हज़रत अब्बास (रज़ि०) को अपना कुर्ता दिया था नबी (सल्ल०) ने उसे अपना कुर्ता पहनाकर दफ़न किया।

□ □ □

इतिहास इस घटना को भी भूल नहीं सकता जो घटना नबी (सल्ल०) के साथ तायफ़ में घटी थी। नबी (सल्ल०) जब तायफ़ गए तो वहाँ के लोगों ने आप (सल्ल०) के साथ दुष्टतापूर्वक व्यवहार किया। आप (सल्ल०) को और आप (सल्ल०) के पैग़ाम को झुठलाया, आप (सल्ल०) को सताने के लिए लड़कों को आप (सल्ल०) के पीछे लगा दिया। आप (सल्ल०) पर पत्थरों की बारिश की गई जिससे आप (सल्ल०) के पैर रक्तरंजित (लहूलुहान) हो गए। लेकिन आप (सल्ल०) ने तायफ़वासियों के हक़ में बद्दुआ नहीं की।

□ □ □

हुदैबिया के मैदान में नबी (सल्ल०) मुसलमानों के साथ प्रातः काल (फ़ज्र) की नमाज़ पढ़ रहे थे। दुश्मनों के सत्तर या अस्सी आदमी चुपके से तनीम पर्वत से उतरे, ताकि मुसलमानों को नमाज़ की हालत में क़त्ल कर दें। ये सभी लोग पकड़े गए। लेकिन नबी (सल्ल०) ने इनको बिना किसी फ़िद्या (दण्ड या अर्थदण्ड) के छोड़ दिया और उनके घातक आक्रमण का कुछ भी ख़याल न किया।

□ □ □

हज़रत तुफ़ैल-बिन-अम्र (रज़ि०) नबी (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुए और कहा कि दौस क़बीले ने अवज्ञा की नीति अपनाई है और सत्य को मानने से इनकार किया है। आप इस क़बीले के लिए बद्दुआ करें। लेकिन बद्दुआ के बजाए आप (सल्ल०) के मुख से ये शब्द निकले—

"अल्ला-हुम-म यह्दि दौसन व आतिबिहिम।"

अर्थात् "ऐ अल्लाह दौस का मार्गदर्शन कर और उन्हें मेरे पास ला दे।"

उदाहरण और भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं, किन्तु ये कुछ मिसालें ही यह जानने के लिए पर्याप्त हैं कि नबी (सल्ल०) की नीति अपने ग़ैरों के साथ कैसी रही है और आप (सल्ल०) अपने दुश्मनों के साथ कैसा व्यवहार करते थे। नबी (सल्ल०) ने कहा है—

इर्हमू मन फ़िल अर्ज़ यर्हमकुम मन फ़िस्समाए

"ज़मीनवालों पर दया करो, आसमानवाला (ईश्वर) तुम पर दया करेगा।"

नबी (सल्ल०) का संपूर्ण जीवन इसी शिक्षा का दर्पण रहा है।

राह में काँटे जिसने बिछाए
गाली दी पत्थर बरसाए!
उसपर छिड़की प्यार की शबनम
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।।

☆☆☆